बनना है तो पानी की तरह बनो जो अपना रास्ता खुद बनाता है, बाकि पत्थर तो लोगों का रास्ता रोकते ही हैं।–अज्ञात।

विचार-प्रवाह देहरादून, मंगलवार 8 फरवरी 2022
पेज थ्री
www.page3news.in

धार्मिक भावनाओं को ठेस

मामला शुरू हुआ इस साल एक जनवरी को, जब इंदौर में आयोजित एक शो के सिलसिले में फारूकी को इंदौर पुलिस ने गिरफ्तार किया। उनके खिलाफ शिकायत एक बीजेपी विधायक के बेटे ने की थी। आरोप तब भी वही था हिंदू देवी–देवताओं का अपमान करने का।

नवीन पंडित।।

स्टैंड–अप कमीडियन मुनव्वर फारूकी की निराशा एक लोकतांत्रिक व्यवस्था की नाकामी का संकेत है। रविवार को बेंगलुरु में होने वाला अपना शो आखिरी पलों में कैंसल किए जाने के बाद उन्होंने सोशल मीडिया पर लिखा, 'नफरत जीत गई, आर्टिस्ट हार गया। आइ एम डन, गुड बाई (मैं थक गया, अलविदा)।' यह कोई पहला शो नहीं था मुनव्वर फारूकी का, जो इस तरह कैंसल किया गया हो। पिछले दो महीनों में अलग–अलग राज्यों और शहरों में उनके 12 शो कैंसल किए गए हैं।

दिलचस्प है कि ये सारे राज्य किसी एक ही पार्टी के शासन वाले नहीं हैं। अगर उनके सूरत, वड़ोदरा और अहमदाबाद में आयोजित शो नहीं होने दिए गए तो मुंबई और रायपुर में होने वाले शो भी उसी गति को प्राप्त हुए। इसके पीछे जरूर हर जगह बजरंग दल और अन्य हिंदुत्ववादी संगठनों की ओर से दी जा रही धमकियों की भूमिका रही, जिनका यह आरोप रहा है कि फारूकी हिंदू देवी–देवताओं का मजाक उड़ाकर उनकी धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाते हैं।

मामला शुरू हुआ इस साल एक जनवरी को, जब इंदौर में आयोजित एक शो के सिलसिले में फारूकी को इंदौर पुलिस ने गिरफ्तार किया। उनके खिलाफ शिकायत एक बीजेपी विधायक के बेटे ने की थी। आरोप तब भी वही था हिंदू देवी–देवताओं का अपमान करने का। हालांकि फारूकी के मुताबिक उन्होंने वे जोक सुनाए ही नहीं। शो से पहले ही उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया था। करीब साल पूरा होने को आया, लेकिन अभी तक उस मामले में चार्जशीट भी फाइल नहीं की गई। फिर भी मामला अदालत में है और इसीलिए उसमें कौन कितना दोषी या निर्दोष है, यह अदालत से ही तय होगा।

यहां सवाल उनके या किसी भी कमीडियन, कलाकार, पत्रकार या आम नागरिक की अभिव्यक्ति की आजादी का है। तमाम नियम कायदों और निर्धारित प्रक्रियाओं का पालन करते हुए किसी कलाकार का शो आयोजित होता है और कोई संगठन आयोजकों को धमकी देता है कि शो हम नहीं होने देंगे तो जाहिर है इस धमकी का कोई कानूनी आधार नहीं है। बावजूद इसके कानून–व्यवस्था सुनिश्चित करने वाली पुलिस मशीनरी ऐसी धमकियों से सुरक्षा देने के बजाय शो का ही परमिशन वापस ले लेती है तो इसे उसकी नाकामी नहीं तो और क्या कहा जाए? और ऐसा एक के बाद एक कई राज्यों में हो तो यह हमारी लोकतांत्रिक व्यवस्था की साख पर बड़ा सवाल खड़ा करता है। बेशक, अभिव्यक्ति के अधिकार पर कई तरह की कानूनी पाबंदियां हैं। अगर कोई इन पाबंदियों का उल्लंघन करता है तो उसके खिलाफ उपयुक्त कदम उठाया जा सकता है। लेकिन किसी को इस आशंका में बोलने ही न दिया जाए कि यह कुछ गलत बोल देगा तो निश्चित रूप से यह उस व्यक्ति के संवैधानिक अधिकारों का उल्लंघन है। संबंधित राज्य सरकारों को तत्काल ऐसा माहौल सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक कदम उठाना चाहिए जिसमें कोई कलाकार हारा हुआ न महसूस करे।

धर्मशास्त्रीय

धर्म-दर्शन

अशोक वोहरा। विज्ञान और धार्मिक ज्ञान धार्मिक ज्ञान जीवन की घटनाओं को एक पवित्र और अलौकिक दृष्टिकोण से समझाने और उनकी दुनिया को नुकसान पहुंचाने का अवसर प्रदान करता है। हो सकता है कि यह आपकी रुचि है कि धर्मशास्त्रीय ज्ञान क्या है? सभी मानव संस्कृतियों में, धार्मिक विश्वास प्रकट होता है, हालांकि इसका जैविक आधार विकासवादी मनोविज्ञान, नृविज्ञान, आनुवंशिकी और ब्रह्मांड विज्ञान के रूप में विविध क्षेत्रों में बहस का विषय है। हालांकि, धार्मिकता की तंत्रिका नींव के बारे में बहुत कम जानकारी है। संज्ञानात्मक तंत्रिका विज्ञान अध्ययनों ने असामान्य और असाधारण धार्मिक अनुभवों के तंत्रिका संबंधी संबंधों पर अपने प्रयासों को केंद्रित किया है, जबकि नैदानिक अध्ययनों ने रोग संबंधी धार्मिक अभिव्यक्तियों पर ध्यान केंद्रित किया है।

संपादकीय

साउथ ने लुभाया

दिलचस्प है कि हिंदी दर्शक 2021 में दक्षिण भारत से आईं 'जय भीम', 'कर्णन', 'नायट्टू', 'जोजी', 'द ग्रेट इंडियन किचन', 'कला', 'गरुड़ गमन वृषभ वाहन', 'सरपटा परमबराई' आदि फिल्में देख लें तो उन्हें भारतीय सिनेमा का वास्तविक परिदृश्य समझ में आएगा। यह कहना पड़ेगा कि भारतीय सिनेमा की मुख्यधारा अब हिंदी फिल्में नहीं रह गई हैं। साउथ की फिल्में उनकी जगह आ गई हैं। अंत में यह जिक्र जरूरी है कि वेब सीरीज की प्रचुरता और स्वीकृति ने भी हिंदी दर्शकों को अपनी तरफ खींचा है। 'मिर्जापुर', 'पाताल लोक', 'स्कैम', 'महारानी' और 'गुल्लक' आदि लोकप्रिय वेब सीरीज रही हैं। मनोरंजन उद्योग की इस नई विधा ने सभी निर्माताओं को अपनी तरफ झुकाया है। सभी प्रॉडक्शन कंपनियां किसी न किसी वेब सीरीज का निर्माण कर रही हैं। ओटीटी ने उन्हें घर बैठे यह अवसर दिया है, जिसे अंग्रेजी पढ़ने में सक्षम शहरी मध्यवर्गीय दर्शकों ने लपक लिया है। दक्षिण भारत की फिल्मों में कंटेंट की क्वॉलिटी, विषयों की विविधता और प्रस्तुति हिंदी फिल्मों की अपेक्षा प्रभावशाली है। वहां के लोकप्रिय स्टार भी प्रयोगधर्मी और साहसी फिल्मों का हिस्सा बन रहे हैं। समाज के वंचित तबकों के प्रतिनिधियों को इन फिल्मों में नायकत्व मिल रहा है। इतना तय है कि फिल्म, टीवी और वेब सीरीज नए–नए विकल्पों के साथ लोगों का मनोरंजन करते हुए इस कठिन दौर को जहां तक हो सके आसान बनाने का काम जारी रखेंगे।

ओमिक्रॉन के खौफ के कारण दिल्ली और अन्य राज्यों में सिनेमाघरों पर लगी पाबंदियों को देखते हुए रिलीज टाल दी गई। फिर भी 2021 में रिलीज हुई फिल्मों की संख्या 100 के पार हो गई।

हिंदी फिल्मों से निराशा

अजय ब्रह्मात्मज।।

साल 2021 की आखिरी हिंदी फिल्म शाहिद कपूर अभिनीत और गौतम चिन्नानुरी निर्देशित 'जर्सी' 31 दिसंबर 2021 को रिलीज नहीं हो पाई। ओमिक्रॉन के खौफ के कारण दिल्ली और अन्य राज्यों में सिनेमाघरों पर लगी पाबंदियों को देखते हुए रिलीज टाल दी गई। फिर भी 2021 में रिलीज हुई फिल्मों की संख्या 100 के पार हो गई। यानी संख्या के हिसाब से फिल्मों में भारी गिरावट नहीं आई है। हालांकि अधिकांश फिल्में ओटीटी पर ही रिलीज हो पाईं। महामारी के प्रकोप के चलते पूरे देश में सिनेमाघर ज्यादातर बंद ही रहे। अक्टूबर के मध्य में सभी राज्यों में थिएटर खोलने की घोषणा के बाद सुगबुगाहट हुई, लेकिन 'सूर्यवंशी' की रिलीज के पहले तक दर्शक थिएटर जाने में हिचकते रहे। रोहित शेट्टी की फिल्म 'सूर्यवंशी' ने दर्शकों को सिनेमाघर पहुंचने के लिए प्रेरित किया। ज्यादातर राज्यों में 50 प्रतिशत की क्षमता से ही थिएटर खोलने की अनुमति के बावजूद इस फिल्म ने महीने भर के अंदर 193 करोड़ से अधिक का कारोबार कर लिया था। इससे यह बात फिर स्थापित हुई कि अगर लोकप्रिय स्टार अच्छी पैकेजिंग के साथ थिएटर में फिल्में लेकर आएं तो उन्हें दर्शक मिलेंगे। देखना यह है कि 7 जनवरी, 2022 को रिलीज हो रही राजामौली की 'आरआरआर' देखने कितने दर्शक आते हैं।

इस बीच बॉक्स ऑफिस पर दिखी उम्मीद की किरणों को ओमिक्रॉन के डर के बादलों ने एक बार फिर ढक दिया है। पूरा देश एक अनिश्चय के दौर से गुजर रहा है। हिंदी सिनेमा भी इसी अनिश्चितता के भंवर में फंसा हुआ है। ओटीटी बनाम थिएटर की बहस मंद पड़ गई है। थिएटर में फिल्म देखने के थ्रिल के नॉस्टैल्जिक एहसास के बावजूद ओटीटी अब सर्वमान्य सचाई है। ट्रेड पंडितों के मुताबिक, सीमित बजट की मझोली और छोटी फिल्में निश्चित लाभ के लिए स्ट्रीमिंग प्लैटफॉर्म पर आती रहेंगी। बीच–बीच में लोकप्रिय स्टारों की बड़ी फिल्में भी आ जाएंगी। थिएटर को सिर्फ इवेंट और बिग बजट फिल्मों से ही उम्मीद करनी होगी। ओटीटी और थिएटर का सहअस्तित्व ही फिल्मों को समुचित कारोबार का आधार दे पाएगा। 2022 में स्वतंत्र रूप से ओटीटी के लिए फिल्में तैयार करने की संभावना मजबूत हुई है। महामारी के पहले जो 'मल्टिप्लेक्स सिनेमा' था, वही अब 'ओटीटी सिनेमा' हो गया है।

कारोबार और कामयाबी की चिंताओं से निकलकर फिल्मों की गुणवत्ता पर बात करें तो इस साल हिंदी फिल्मों ने बेहद निराश किया है। ऐसा लगता है कि हिंदी फिल्में स्टारडम के चलन से एक पठार पर पहुंच चुकी हैं। विषय, प्रस्तुति और प्रभाव की विविधता गायब है। लोकप्रिय स्टारों की नए विषयों में रुचि नहीं दिखती। वे पुराने लटके–झटकों में ही दर्शकों को उलझाए रखना चाहते हैं, जबकि दर्शक बार–बार बता रहे हैं कि अगर कंटेंट आकर्षित करेगा तो वे कम लोकप्रिय सितारों की छोटी–मझोली फिल्में भी देखेंगे। आयुष्मान खुराना की 'चंडीगढ़ करे आशिकी' जैसी फिल्में उदाहरण हैं। सलमान खान, अजय देवगन, अक्षय कुमार और जॉन अब्राहम के होने के बावजूद वे 'राधे', 'भुज', 'बेल बॉटम' और 'सत्यमेव जयते 2' नहीं देखेंगे। पिछले 21 महीनों में सभी लोकप्रिय स्टार अपनी चमक खो चुके हैं। आमिर खान की 'लाल सिंह चड्ढा' और आलिया भट्ट की 'गंगूबाई काठियावाड़ी' के अलावा लोकप्रिय स्टार की कोई और उल्लेखनीय फिल्म निकट भविष्य में आती नजर नहीं आ रही है। 2022 पर भी हिंदी फिल्मों में आए ग्रहण का असर दिखेगा।

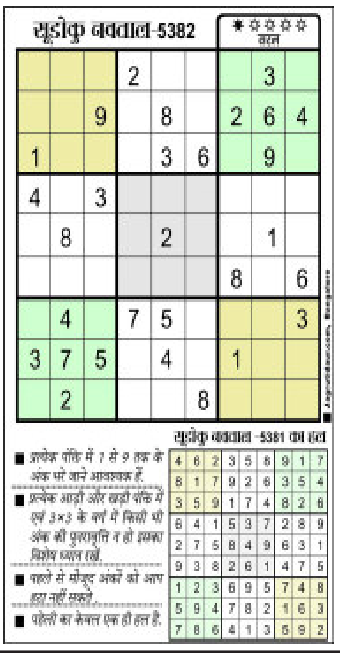

सूडोकू नवताल-5382

★☆☆☆☆ सरल

			2				3	
		9		8		2	6	4
1				3	6		9	
4		3						
	8			2			1	
						8		6
	4		7	5				3
3	7	5		4		1		
	2				8			

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकू नवताल -5381 का हल

4	6	2	3	5	8	9	1	7
8	1	7	9	2	6	3	5	4
3	5	9	1	7	4	8	2	6
6	4	1	5	3	7	2	8	9
2	7	5	8	4	9	6	3	1
9	3	8	2	6	1	4	7	5
1	2	3	6	9	5	7	4	8
5	9	4	7	8	2	1	6	3
7	8	6	4	1	3	5	9	2

अपना ब्लॉग

स्टार अपनी फिल्में हिंदी में डब कर रहे

मोहन। फिल्म इंडस्ट्री को उबरने और पटरी पर लौटने में समय लगेगा। 2021 की उल्लेखनीय हिंदी फिल्मों की चर्चा करें तो उनकी संख्या एक दर्जन से अधिक नहीं होगी। 'सरदार उधम', 'मील पत्थर', 'शेरनी', 'रश्मि रॉकेट' 'मिमी', 'संदीप और पिंकी फरार', 'रामप्रसाद की तेरहवीं' और 'पगलेट' अपेक्षाकृत अच्छी फिल्में हैं। इनमें से किसी भी फिल्म में कोई बड़ा स्टार नहीं हैं। इन फिल्मों के निर्देशक ने लीक से हटकर कुछ नया करने की कोशिश की है। ज्यादातर फिल्में ओटीटी पर ही आईं, इसलिए उनके कारोबार के आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं। फिर भी उनकी कामयाबी पर कोई संदेह नहीं किया जा सकता। दक्षिण भारत के लोकप्रिय स्टार अपनी फिल्में हिंदी में डब कर रहे हैं। वे हिंदी दर्शकों के बाजार में अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहे हैं। अल्लू अर्जुन की फिल्म 'पुष्पा' हिंदी दर्शकों को काफी पसंद आई है। इस बीच, दक्षिण भारत की चार भाषाओं दृ तमिल, तेलुगू, कन्नड़ और मलयालम दृ से डब की हुई या सबटाइटल के साथ रिलीज हुई फिल्मों ने हिंदी दर्शकों को तेजी से रिझाया है।

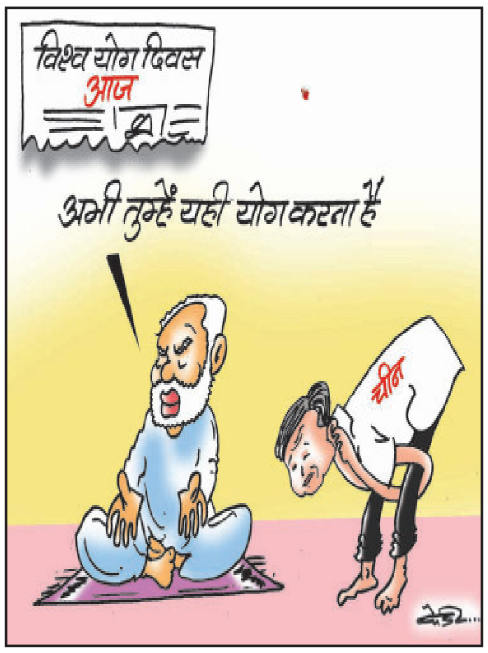
विश्व योग दिवस
आज
अभी तुम्हें यही योग करना है
चीन